श्री शिव ताण्डव स्तोत्रम्

जटाटवी गलज्जल प्रवाह पावित स्थले
गले ऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्ग तुङ्ग मालिकाम् ।
डमड्‌ डमड्‌ डमड्‌ डमन् निनाद वड्डुमर्वयं
चकार चण्ड ताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ १॥

जटाकटाह सम्भ्रम भ्रम न्निलिम्प निर्झरी-
-विलोल वीचि वल्लरी विराज मान मूर्धनि ।
धगद्‌ धगद्‌ धगज्ज्वलल्‌ ललाट पट्ट पावके
किशोर चन्द्र शेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ २॥

धरा धरेन्द्र नन्दिनी विलास बन्धु बन्धुर
स्फुरद्दिगन्त सन्तति प्रमोद मान मानसे ।
कृपा कटाक्ष धोरणी निरुद्ध दुर्धरा पदि
क्वचिद्दि गम्बरे मनो विनोद मेतु वस्तुनि ॥ ३॥

जटा भुजङ्ग पिङ्गल स्फुरत्‌ फणामणि प्रभा
कदम्ब कुङ्कुम द्रव प्रलिप्त दिग्वधू मुखे ।
मदान्ध सिन्धुर स्फुरत्‌ त्वगुत्तरीय मेदुरे
मनो विनोद मद्‌भुतं बिभर्तु भूत भर्तरि ॥ ४॥

सहस्र लोचन प्रभृत्य शेषलेख शेखर
प्रसून धूलि धोरणी विधू सराङ्घ्रि पीठभूः ।
भुजङ्ग राज मालया निबद्ध जाट जूटक
श्रियै चिराय जायतां चकोर बन्धु शेखरः ॥ ५॥

ललाट चत्वर ज्वलद् धनञ्जय स्फुलिङ्गभा-
-निपीत पञ्च सायकं नमन्निलिम्प नायकम् ।
सुधा मयूख लेखया विराजमान शेखरं
महा कपालि सम्पदे शिरो जटाल मस्तु नः ॥ ६॥

कराल भाल पट्टिका धगद् धगद् धगज्ज्वलद्-
धनञ्जया हुती कृत प्रचण्ड पञ्च सायके ।
धरा धरेन्द्र नन्दिनी कुचाग्र चित्र पत्रक-
-प्रकल्प नैक शिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥ ७॥

नवीन मेघ मण्डली निरुद्ध दुर्धर स्फुरत्-
कुहू निशीथि नीतमः प्रबन्ध बद्ध कन्धरः ।
निलिम्प निर्झरी धर स्तनोतु कृत्ति सिन्धुरः
कलानि धान बन्धुरः श्रियं जगद् धुरन्धरः ॥ ८॥

प्रफुल्ल नील पङ्कज प्रपञ्च कालिम प्रभा-
-वलम्बि कण्ठ कन्दली रुचि प्रबद्ध कन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्ध कच्छिदं तमन्त कच्छिदं भजे ॥ ९॥

अगर्व सर्व मङ्गला कला कदम्ब मञ्जरी
रस प्रवाह माधुरी विजृम्भणा मधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्त कान्ध कान्तकं तमन्त कान्तकं भजे ॥ १०॥

जयत्वदभ्र विभ्रम भ्रमद्भुजङ्ग मश्वसद्

विनिर्ग मत्क्रम स्फुरत् कराल भाल हव्यवाट् ।
धिमिद् धिमिद् धिमिध्वनन् मृदङ्ग तुङ्ग मङ्गल
ध्वनि क्रम प्रवर्तित प्रचण्ड ताण्डवः शिवः ॥ ११॥

दृषद् विचित्र तल्पयोर् भुजङ्ग मौक्तिक स्रजोर्-
-गरिष्ठ रत्न लोष्ठयोः सुहृद् विपक्ष पक्षयोः ।
तृणारविन्द चक्षुषोः प्रजामही महेन्द्रयोः
समं प्रवर्त यन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥ १२॥

कदा निलिम्प निर्झरी निकुञ्ज कोटरे वसन्
विमुक्त दुर्मतिः सदा शिरः स्थमञ्जलिं वहन् ।
विमुक्त लोल लोचनो ललाम भाल लग्नकः
शिवेति मन्त्र मुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥ १३॥

इदम् हि नित्य मेव मुक्त मुत्त मोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धि मेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्ति माशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥ १४॥

पूजाव सान समये दशवक्त्र गीतं
यः शम्भु पूजन परं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथ गजेन्द्र तुरङ्ग युक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शम्भुः ॥ १५॥

॥ इति श्रीरावण विरचितं शिव ताण्डव स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥